इल्तुतमिश (Iltumish)—इल्तुतमिश 1211 ई. में जब बादशाह बना तब उसकी स्थिति अच्छी नहीं थी. उसने स्वयं को अनेक परेशानियों से घिरा हुआ पाया. इल्तुतमिश का सिंहासन पर कोई वंशानुगत अधिकार नहीं था. वह मूलरूप से गुलाम और क़ुरान के नियम के अनुसार कोई भी गुलाम शासक नहीं हो सकता. इसलिए उसे अधिकांश लोग सुल्तान मानने को तैयार न थे. उसके समान शक्तिशाली दूसरे सरदार भी थे. जो उसकी उन्नति बर्दाश्त नहीं कर सकते थे और उससे जलते थे. मोहम्मद गौरी के परिवार से सम्बन्धित कुतुबी और मुइज्जी सरदार उसे अपना शासक मानने को तैयार न थे और उससे युद्ध करने की तैयारी कर रहे थे. सिंध और मुल्तान के शासक नसीरुद्दीन कबाचा और गजनी के सुल्तान ताजउद्दीन याल्दोज ने इल्तुतमिश को दिल्ली की गद्दी का वारिस मानने से इन्कार कर दिया और स्वयं लाहौर प्रान्त पर अधिकार करने का प्रयास करने लगे. इल्तुतमिश के समक्ष मुख्य समस्या यह थी कि कुतुबउद्दीन ऐबक की मृत्यु के बाद उत्पन्न हुई. अस्थिर दशा का लाभ उठा कर कुछ मुसलमान सूबेदारों ने स्वयं को घोषित कर दिया. बिहार और बंगाल के सूबेदार अलीमर्दान ने दिल्ली से अपने सम्बन्ध तोड़ दिए और स्वतन्त्र राज्य स्थापित किया. इसी भाँति हिन्दू राजाओं ने भी स्थिति का लाभ उठाने का प्रयास किया, उन पर सुल्तान का प्रभाव नाममात्र का रह गया.

इन सभी समस्याओं का इल्तुतमिश ने सफलतापूर्वक सामना किया. उसने अपने अदम्य साहस और विवेक का परिचय दिया और साम्राज्य को विघटित होने से बचा लिया. उसने सर्वप्रथम विद्रोही सूबेदारों का दमन किया. सर्वप्रथम उसने कुतुबी और मुइज्जी सूबेदारों या अमीरों की ओर ध्यान दिया जो इल्तुतमिश के सम्राट बनने से नाखुश थे और सिंहासन पर कानूनी रूप से अपना अधिकार समझते थे. इल्तुतमिश ने उनको दिल्ली के पास इतनी बुरी तरह हराया कि वे दुबारा सिर उठाने का साहस न कर सके.

इन अमीरों को परास्त करने के पश्चात् इल्तुतमिश अपनी स्थिति को मजबूत किया और उस खतरे का मुकाबला करने की तैयारी करने लगा जो गजनी की तरफ से उठ रहा था. गजनी के सुल्तान ताजउद्दीन याल्दोज ने कुतुबुउद्दीन ऐबक की मृत्यु के पश्चात् नसीरुद्दीन कबाचा को हरा कर पंजाब पर अधिकार कर लिया और पंजाब में उसने अपने पैर जमा लिए. इल्तुतमिश उत्तरी सीमा पर अपने इस शक्तिशाली

Scanned with CamScanner

प्रतिद्वंद्वी को बर्दाश्त
इसलिए इल्तुतमिश एक बड़ी सेना लेकर
उसका मुकाबला करने के लिए तराइन के
ऐतिहासिक मैदान में 1215 ई. में पहुँच गया
ताजउद्दीन याल्दोज और इल्तुतमिश के बीच
तराइन का तृतीय युद्ध हुआ जिसमें ताज
उद्दीन की हार हुई और उसे कैद करके
मौत के घाट उतार दिया गया. इस प्रकार
इल्तुतमिश ने अपने एक घातक प्रतिद्वंद्वी से
मुक्ति पायी और चैन की सांस ली.

ताजउद्दीन याल्दोज से मुक्ति पाने के बाद इल्तुतमिश ने अपने दूसरे ताकतवर प्रतिद्वंद्वी नसीरुद्दीन कबाचा से खतरा उत्पन्न हो गया. वह सिंध और मुल्तान का शासक था. इसने भी पंजाब के कुछ भाग पर कब्जा कर लिया था, जो इल्तुतमिश को असहनीय था. इसलिए उसने 1217 ई. में नसीरुद्दीन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दीं और उसे पंजाब से बाहर कर दिया. इस समय इल्तुतमिश अनेक समस्याओं से घिरा हुआ था इसलिए उसने नसीरुद्दीन का पीछा नहीं किया और उसे परास्त करके छोड़ दिया और लगभग एक दशक तक उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया. 1227 ई. में पुनः उसने नसीरुद्दीन पर आक्रमण किया और पहले उसे उच (मुल्तान) में हराया और फिर भक्कड़ में नसीर बुरी तरह परास्त हुआ और अपने प्राणों को बचाने के लिए भागा, परन्तु नदी में डूबकर मर गया. इस प्रकार इल्तुतमिश के एक पुराने शत्रु का अन्त हुआ.

यह पहले ही बताया जा चुका है कि बंगाल एवं बिहार में अलीमर्दान खाँ ने स्वयं को स्वतन्त्र घोषित कर दिया था. यद्यपि 1212 ई. में उसकी मृत्यु हो गयी थी फिर भी बंगाल ने अपनी स्वतन्त्रता बरकरार कर रखी थी. जब इल्तुतमिश ने गियासुद्दीन खिलजी से आधीनता स्वीकार करने को कहा तो उसने साफ इन्कार कर दिया. इस पर इल्तुतमिश ने 1220 ई. में एक सेना बंगाल पर विजय प्राप्त करने के लिए स्वयं लेकर गया. इससे गियासुद्दीन डर गया और उसने आत्मसमर्पण कर दिया एवं एक बहुत बड़ी राशि देने को तैयार हो गया. लेकिन जब तक शाही फौज वापस दिल्ली पहुँचती बंगाल में पुनः विद्रोह हो गया और गियासुद्दीन ने स्वयं को स्वतन्त्र घोषित कर दिया इससे इल्तुतमिश अत्यधिक क्रोधित हुआ और उसने अपने पुत्र नसीरुद्दीन को तुरन्त बंगाल पर आक्रमण करने का आदेश दिया. नसीरुद्दीन तुरन्त ही आदेश का पालन करने के लिए अवध से चल पड़ा. नसीरुद्दीन और गियासुद्दीन का भीषण युद्ध हुआ जिसमें गियासुद्दीन हार गया और मारा गया. उसके साथ अनेक खिलजी सरदार और सैनिक मारे गए और अनेक कैद में डाल दिए गए. इस प्रकार बंगाल पर दिल्ली का अधिकार

Scanned with CamScanner

इल्तुतमिश को राजपूतों से भी युद्ध करना पड़ा. ऐबक की मृत्यु के बाद ग्वालियर और रणथम्भोर ने भी स्वयं को स्वतन्त्र घोषित कर दिया था और बाद में अनेक राजपूत राज्यों ने इनका अनुसरण किया. इसलिए तुर्कों की प्रतिष्ठा पश्चिम भारत में पुनः स्थापित करने के लिए इल्तुतमिश का इन राज्यों से युद्ध करना अनिवार्य था. जब 1231 ई. में इल्तुतमिश ने ग्वालियर पर आक्रमण किया उस समय वहाँ पर मंगलदेव का शासन था. मंगलदेव ने इल्तुतमिश का डटकर मुकाबला किया. लगभग 11 महीने के जबर्दस्त संघर्ष के बाद इल्तुतमिश 1232 ई. में युद्ध जीतने में सफल हुआ और उसने ग्वालियर पर कब्जा कर लिया. इसके बाद उसने 1235 ई. तक मालवा, उज्जैन, रणथम्भोर, माण्डू पर विजय प्राप्त करके साम्राज्य का विस्तार किया. इस प्रकार भारत में मुस्लिम राज्य की नींव पड़ी.

Scanned with CamScanner